



सीरिया में राजनीतिक गतिरोध और राष्ट्रपति असद का प्रभुत्व

डॉ. फज्जुर रहमान सिद्दीकी *

अपने आरंभ के बाद से, तीन कारकों के चलते सीरियाई विद्रोह ने वह रूप ग्रहण किया जो उसका है: उसका सैन्यीकरण, उसका सांप्रदायकीकरण और अंततः जिस प्रकार यह देश क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के प्रतिनिधियों के लिए लड़ाई का मैदान बन गया।¹

क्षेत्रीय स्तर पर राष्ट्रपति असद की सरकार को ईरान, लेबनान के हिज्बुल्लाह का और साथ ही इराक का भी महत्वपूर्ण समर्थन मिला। सऊदी अरब, कतर और तुर्की ने असद विरोधी विद्रोही बलों को समर्थन दिया।² श्री असद के विरुद्ध प्रारंभिक प्रतिरोधों में से एक उनकी सेना के एक धड़े द्वारा किया गया, जिन्होंने 'फ्री सीरियन आर्मी' नामक एक समूह का गठन किया और बाद में इसमें आईएसआईएस और जभात फतह-अल-शाम जैसी उसकी अन्य शाखाएं भी शामिल हो गईं। राष्ट्रपति असद को रूस से सैन्य और कूटनीतिक समर्थन प्राप्त है, जबकि अमेरिका असद विरोधी शक्तियों को हथियारबंद कर रहा है और उसने रासायनिक हथियारों के इस्तेमाल के लिए सरकार के विरुद्ध यदा-कदा हवाई हमले भी किए हैं। साथ ही अमेरिका कुछ कुर्द समूहों को प्रशिक्षण और समर्थन भी दे रहा है। सीरियाई दलदल में नवीनतम प्रवेशकर्ता इजरायल राज्य है, जो इस क्षेत्र के बाहर होने के चलते सीधे असद की सरकार का मुकाबला नहीं कर रहा है, लेकिन वह सीरिया में ईरान या हिज्बुल्लाह की किसी भी रणनीतिक और सैन्य मोरचाबंदी का विरोध करता है।

यह वर्ष सीरिया में युद्ध की सातवीं वर्षगांठ और संयुक्त राष्ट्र के नेतृत्व में शांति वार्ता की छठी वर्षगांठ है। शांति पहले आगे बढ़ने में विफल रही है। राष्ट्रपति बशर अल असद के सत्ता से जल्द बाहर होने के बारे में पूर्व की सभी भविष्यवाणियां पूरी तरह से गलत की गईं प्रतीत होती हैं।

आज वह देश भर में खुद को मजबूत कर चुके प्रतीत होते हैं। आज आप सीरियाई शहरों में कई बैनर देख सकते हैं, जिसमें लिखा है, "विजयी सीरिया में आपका स्वागत है और "असद ने विजय प्राप्त की है"। 3 राष्ट्रपति असद ने अधिकांश क्षेत्रों पर नियंत्रण पुनः स्थापित कर लिया है, जो उनकी सेना ने 2015 में आईएसआईएस के उदय के बाद विद्रोही बलों के हाथों खो दिया था। एकमात्र क्षेत्र जो असद की सेनाओं के नियंत्रण से परे है, वह उत्तर में इदलिब शहर है और चहल-पहल भरी कूटनीति के बाद; कम से कम अस्थायी रूप से सैन्य हमला टल गया है।

असद बाहरी हस्तक्षेप की छाया में बचे रहे और शांति प्रक्रिया विफल रही:

राष्ट्रपति असद के पक्ष में जिस चीज ने पलड़ा भारी किया, वह ईरान और रूस का हस्तक्षेप था। ईरान के आध्यात्मिक नेता अली खामनेई के सलाहकार अली अकबर वेलयाती ने 2017 में एक साक्षात्कार में बहुत ही स्पष्ट रूप से टिप्पणी की कि "हमारे बगैर, बशर बचे नहीं रहते"। 2018 की शुरुआत में, हिजबुल्ला के महासचिव हसन नसरल्लाह ने एक अलग साक्षात्कार में दावा किया कि, "वे (असद और उनका शासन) इसलिए अक्षुण्ण रहे क्योंकि उनकी देखभाल करने वाला कोई था"। 6

सऊदी अरब की कम होती भूमिका, पश्चिमी शक्तियों की निष्क्रियता और अमेरिका की ओर से हस्तक्षेप करने की अनिच्छा और आईएसआईएस और कुर्द ब्लॉक पर उसके विशेष ध्यान ने भी असद की सहायता की। विद्रोही बलों के बीच बढ़ती दरार और वैचारिक विभाजन ने असद के लिए एक प्रमुख राजनीतिक परिसंपत्ति के रूप में कार्य किया। प्रतिनिधियों के संरक्षक एकजुट नहीं थे और एक-दूसरे को जितना सहयोगी के रूप में देखते थे उतना ही प्रतिद्वंद्वी के रूप में भी देखते थे। असद की कूटनीतिक सफलता ने सभी विरोधी बलों को आतंकवादी का रूप दे दिया।

पिछले छह-सात वर्षों की अवधि में मुद्दों को सुलझाने के लिए विभिन्न कर्ताओं द्वारा कई ठोस पहलें की गईं, लेकिन बिना किसी नतीजे के। पहली बड़ी पहल यूएनएससी को प्रस्तुत की गई संयुक्तर राष्ट्रभ और अरब लीग की शांति योजना के रूप में की गई थी जो जिनेवा और अस्ताना शांति वार्ता का आधार बनी।

2012 में आरंभ होने वाली जिनेवा वार्ता के आठ दौर ने कुछ नहीं हासिल किया और आश्चर्यजनक रूप से इसकी एकमात्र सफलता नवंबर 2017 में अंतिम दौर में शासन और विपक्ष का एक साथ बैठना था। जिनेवा वार्ता की प्रगति में बाधा डालने वाले कई कारक थे लेकिन सबसे प्रमुख कारक विरोधी बलों द्वारा बातचीत का अंतिम लक्ष्य राष्ट्रपति असद को हटाने की पूर्व शर्त में बदलना रहा था। विपक्ष का इस पारंपरिक उद्देश्य से चिपकाव स्पष्ट रूप से जमीन पर बदलती राजनयिक और रणनीतिक वास्तविकताओं को पढ़ने में विफल रहा है। आईएसआईएस का उदय राष्ट्रपति असद के पक्ष में काम करने वाला कारक बन गया। इसने अफसाना बदलने में उनकी सहायता की और साथ ही युद्ध की दिशा को भी बदल दिया।

जिनेवा शांति वार्ता के आठ दौरों के साथ, पिछले डेढ़ वर्षों में अस्ताना शांति प्रक्रिया दस दौर की वार्ताओं का साक्षी बनी। एकमात्र सफलता जो इसने हासिल की वह चार युद्ध की तीव्रता में कमी वाले क्षेत्रों (इदलिब, होम्स, पूर्वी और दरी) की घोषणा थी। हालांकि युद्ध की तीव्रता में कमी के समझौते ने केवल आंशिक सफलता ही प्राप्त की है।

बदलती बाहरी और आंतरिक गतिशीलता ने भी असद की सफलता में योगदान दिया:

राष्ट्रपति असद से पद छोड़ने के लिए कहने वाला तुर्की पहला राष्ट्र था लेकिन सीरिया के साथ अपनी सीमा पर दुर्जेय शक्ति के रूप में कुर्द राष्ट्रवाद का डर अब उसकी नीति में थोड़ा फर्क ला रहा है। अमेरिका का ध्यापन आईएसआईएस पर केंद्रित होने से असद के भविष्य पर बातचीत का दायरा सीमित हो गया है और इसने अमेरिका द्वारा तुर्की विरोधी कुर्द बलों का अमेरिका द्वारा समर्थन करने की नई प्रतिबद्धताएं भी पैदा की हैं, जिससे दो नाटो सहयोगियों: अमेरिका और तुर्की के बीच दुश्मनी अधिक सुस्पष्ट होती जा रही है।

इदलिब को लेकर रूस और तुर्की के बीच मौजूदा गतिरोध से सीरिया में वर्तमान रणनीतिक और राजनयिक गठबंधनों में एक नया तत्व जुड़ने की संभावना है। हालांकि इदलिब में अभियान को कुछ समय के लिए टाल दिया गया है, लेकिन भविष्य में किसी भी सैन्य कार्रवाई से सीरिया से तुर्की में नया पलायन होगा, जो पहले से ही काफी दबाव में है।

हाल के दिनों में न केवल सऊदी अरब की भूमिका कम हुई है बल्कि ईरान की भूमिका भी काफी बदल गई है। अब वह हथियार या प्रशिक्षण नहीं प्रदान कर रहा है लेकिन अस्ताना शांति प्रक्रिया का हिस्सा बना हुआ है। इजरायल ने इजरायल-सीरिया सीमा पर ईरान के बढ़ते प्रभाव पर बार-बार अपनी चिंता व्यक्त की है और समय-समय पर सीरिया में उसके सैन्य ठिकानों के विरुद्ध हवाई हमले किए हैं। ऐसी खबरें हैं कि ईरान समर्थित मिलिशिया, अल-नुजाबा ने इजरायल के कब्जे वाली गोलन पहाड़ियों को मुक्त कराने के लिए अभियान शुरू करने की धमकी दी है। क्षेत्रीय अराजकता का एक अन्य शिकार जॉर्डन अपना व्यापार पुनर्जीवित करने के लिए सीरिया के साथ अपनी सीमा पर जल्द स्थिरता चाहता है, लेकिन इजरायल इसे अपने रणनीतिक हितों के विपरीत देखता है क्योंकि इससे ईरान के लिए और अधिक रणनीतिक दखलंदाजी का मार्ग प्रशस्त होने की संभावना है।

कुर्द प्रतिनिधियों और राष्ट्रपति असद की सरकार के बीच हालिया बैठक ने सीरियाई संकट में एक नया प्रवाह जोड़ा है। 18 दोनों पक्षों के बीच दुश्मनी का इतिहास रह है, लेकिन पूरे गृहयुद्ध के दौरान, असद की सेनाओं ने कुर्दों से सीधे टकराव से परहेज किया क्योंकि सरकार उन्हें दोस्तों से दुश्मन बने तुर्की के विरुद्ध दुर्जेय बल के रूप में देखती है। इसके अलावा कुर्दों की सैन्य शाखा ने आईएसआईएस के विरुद्ध अमेरिका के साथ मिलकर लड़ाई लड़ी जिसने उन्हें राष्ट्रपति असद का

स्वाभाविक सहयोगी बना दिया। इसके अलावा विद्रोही सेना के कई सदस्य कथित तौर पर असद की सेना में फिर से शामिल हो गए हैं और केंद्रीय प्राधिकरण के सामने अपना हथियार डाल दिया है।

निष्कर्ष:

सीरिया में गृह युद्ध और उसके बाद की शांति प्रक्रिया ने पहले राष्ट्रपति असद के समयबद्ध पदत्याग की मांग की, लेकिन धीरे-धीरे आईएसआईएस और अन्य उग्र तत्वों के उदय के साथ, पुरानी मांगों की जगह अन्य मांगों ने ले ली जैसे कि आतंकवाद से लड़ना और युद्ध की तीव्रता कम करने के क्षेत्रों की पहचान करना और अस्थायी युद्धविराम। किसी योजना के अभाव और मध्यस्थों और हितधारकों द्वारा एक मुद्दे से हटकर दूसरे मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करना भी राष्ट्रपति असद की राजनीतिक ताकत का स्रोत बन गया। कोई भी देख सकता है कि किस प्रकार पहले का लोकतांत्रिक सुधार, संघीय प्रतिनिधित्व और नया संविधान लिखने का एजेंडा अपना मार्ग भटक गया और अब यह बातचीत का कोई गंभीर घटक नहीं रहा।

सीरिया के राजनीतिक क्षेत्र में प्रवाह और परिवर्तित होती प्राथमिकताओं को देखते हुए, ऐसा लगता है कि राष्ट्रपति असद को विधि-सम्मपत राजनीतिक संस्थानों और अन्य तंत्रों की अनुपस्थिति में पूरे देश पर फिर से नियंत्रण हासिल करने में मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। देश में व्यापक शांति में जिस बात से और देरी हो सकती है वह विरोधी समूहों के बीच तीव्र गुटबाजी का अस्तित्व और बाहरी कर्ताओं के परस्पर विरोधी हित हैं।

* * *

* डॉ फज़ूर रहमान सिददीकी, रिसर्च फेलो, इंडियन काउंसिल ऑफ़ वर्ल्डर अफेयर्स, नई दिल्ली।

अस्वीकरण: व्यक्त किए गए विचार शोधकर्ता के हैं न कि काउंसिल के।

समाप्ति नोट

- 1 मध्य पूर्व का एक लंबा दृश्य, काहिरा समीक्षा साक्षात्कार, <https://cdn.thecairoreview.com/wp-samagry/apload/2018/08/cr30-gelvin.pdf>
- 2 अलजज़ीरा <https://www.aljazeera.com/news/2016/05/syria-civil-war-explained-160505084119966.html>
- 3 <https://www.apnews.com/7481f350fbfd4507a1a3e2b65de7bdc7>
- 4 एयाल ज़िसर, सीरिया में बशर ने युद्ध क्यों जीता? रणनीतिक मूल्यांकन, संस्करण 21, सं. 2, जुलाई 2018
- 5 रॉयटर्स, "अलेप्पो से, शीर्ष ईरानी अधिकारी ने क्षेत्रीय शक्ति के रूप में तेहरान के विकास का अभिवादन किया," हारेत्ज़, 8 नवंबर, 2017। <https://www.haaretz.com/middle-east-news/top-iranian-official-hails-tehran-s-growth-as-regional-power-1.5464066> (22 दिसंबर, 2017 को एक्सेस किया गया)
- 6 एयाल ज़िसर, सीरिया में बशर ने युद्ध क्यों जीता? रणनीतिक मूल्यांकन, संस्करण 21, सं. 2, जुलाई 2018,
- 7 सीरिया राजनयिक वार्ताएं: एक घटनाक्रम, अलजज़ीरा, <https://www.aljazeera.com/news/2017/09/syria-diplomatic-talks-timeline-170915083153934.html>

- 8 द हिंदू एडिटोरियल, 10 अगस्त, 2018, <https://www.thehindu.com/opinion/editorial/towards-wars-end/article2456636.ece> (5 अगस्त, 2018 को एक्सेस किया गया)
- 9 असद की पकड़ में: सीरिया के पूर्व विद्रोहियों के साथ असहज अस्तित्व, एसोसिएट प्रेस न्यूज, <https://apnews.com/f358a6c4ad5e40c7b41a04ca9fb1010119,2108> (10 अगस्त, 2018 को एक्सेस किया गया)